आर्थिक क्रियाकलापों का वर्गीकरण
[CLASSIFICATION OF ECONOMIC ACTIVITIES]

मानव के वह क्रियाकलाप, जिनसे उसे आय प्राप्त होती है, को मानव की क्रियाएँ या आर्थिक क्रियाएँ कहा जाता है। मानव अपने जीविकोपार्जन के लिए वातावरण के साथ सामंजस्य स्थापित कर विभिन्न आर्थिक क्रियाएँ करता है, इन सभी प्रकार के आर्थिक क्रियाओं को मानवीय व्यवसाय कहा जाता है। आर्थिक भूगोल में मानव की आर्थिक क्रियाओं का सर्वोपरि महत्व है। मानव की आर्थिक क्रियाओं के अन्तर्गत प्राकृतिक वस्तुओं का एकत्रण, आखेट, पशुचारण, मत्स्य आहरण, लकड़ी काटना, खनन, कृषि, उद्योग, परिवहन, वाणिज्य एवं व्यापार, चिकित्सा, शिक्षा आदि सेवाएँ सम्मिलित की जाती हैं।

मानव द्वारा की जाने वाली आर्थिक क्रियाओं के निम्नलिखित चार वर्ग होते हैं–

1. प्राथमिक व्यवसाय (Primary Occupation)
2. द्वितीयक व्यवसाय (Secondary Occupation)
3. तृतीयक व्यवसाय (Tertiary Occupation)

1. प्राथमिक व्यवसाय
(PRIMARY OCCUPATION)

प्राथमिक व्यवसायों में प्रकृति प्रदत्त संसाधनों का सीधा उपयोग किया जाता है। मानव के प्रारम्भिक आर्थिक क्रियाकलापों का प्रारम्भ प्राथमिक क्रियाकलापों के रूप में हुआ। मानव अपनी संस्कृति की प्रारम्भिक अवस्था में अपनी सीमित आवश्यकताओं की आपूर्ति के लिए यत्र-तत्र भ्रमण करता हुआ पूरा करता था। इन व्यवसायों में भोजन व वस्तुओं का संग्रह या एकत्रीकरण तथा वन्य जीवों का शिकार प्रमुख था। बाद में संस्कृति स्तर में सुधार होने पर मानव द्वारा पशुपालन, खनन तथा जीवन निर्वाहक कृषि जैसे प्राथमिक व्यवसायों को अपनाया गया। वर्तमान में प्राथमिक व्यवसाय के अन्तर्गत निम्नलिखित चार व्यवसाय प्रमुख हैं–

1. आखेट व भोजन संग्रह, 2. पशुचारण, 3. कृषि, 4. खनन।

1. आखेट एवं भोजन संग्रह (Hunting and Food Gathering)

आखेट तथा भोजन संग्रह मानव द्वारा कीं जाने वाली ज्ञात प्राचीनतम आर्थिक क्रियाएँ हैं।

मानव सभ्यता के आरम्भिक युग में आदिमकालीन मानव अपने जीवन निर्वाह के लिए अपने समीपवर्ती वातावरण पर निर्भर रहता था। उसका जीवन निर्वाह दो कार्यों द्वारा होता था–(i) पशुओं का आखेट करके, (ii) अपने समीपवर्ती जंगलों से खाने योग्य कंद-मूल एवं जंगली पौधे आदि एकत्रित करके।

आदिमकालीन मानवीय समाज कठोर जलवायु दशाओं में अपने भरणपोषण के लिए पूर्णतः पशुओं पर निर्भर था। अति शीत तथा अति गर्म प्रदेशों में निवास करने वाले लोग जंगली पशुओं तथा जलीय क्षेत्रों से मछलियों का शिकार कर अपनी उदरपूर्ति करते थे। वर्तमान में तकनीकी विकास के चलते मछली पकड़ने के कार्य का आधुनिकीकरण हो गया है, लेकिन आज भी विश्व के अनेक तटीय क्षेत्रों में रहने वाले लोग परम्परागत शैली से मछली पकड़ने का कार्य करते हैं। प्राचीन समय में जंगली जीव-जन्तुओं का शिकार करने के लिए शिकारी पत्थर या लकड़ी से निर्मित, औजारों तथा तीरों का उपयोग करते थे, जिससे उनके द्वारा मारे जाने वाले जंगली जीवों की संख्या सीमित रहती थी।

आखेट व भोजन संग्रह व्यवसाय में बहुत कम व्यक्तियों की आवश्यकता होती है, साथ ही अन्य किसी आर्थिक क्रिया की अपेक्षा अधिक क्षेत्र की आवश्यकता होती है। जीवनयापन न्यूनतम आधार पर सम्भव है, फिर भी आदिकाल से ही मनुष्य अपने भोजन, वस्त्र, सुरक्षा और आवश्यकताओं के लिए वस्तुओं का संचय और

भोजन संग्रह व्यवसाय का व्यापारीकरण—उच्च अक्षांशीय तथा निम्न अक्षांशीय क्षेत्रों के कुछ भागों में अधिक पूँजी तथा उच्च तकनीक के माध्यम से भोजन संग्रह व्यवसाय का व्यापारीकरण कर दिया गया है। इसके अन्तर्गत स्थानीय लोगों की सहायता से कीमती वृक्षों की पत्तियाँ, छाल एवं औषधीय पौधों का संग्रह कराया जाता है तथा इन्हें संशोधित कर अन्तर्राष्ट्रीय बाजारों में विक्रय कर दिया जाता है। उदाहरण के लिए, निम्नलिखित संगृहीत वनोत्पादों का आधुनिक मशीनों की सहायता से शोधन कर विभिन्न उपयोगी उत्पादन प्राप्त किए जाते हैं।

संगृहीत वस्तुएँ	शोधित उत्पाद
(i) पौधों की छाल	कुनैन तथा कार्क
(ii) पौधों की पत्तियाँ	पेय पदार्थ, दवाइयाँ तथा कान्तिवर्द्धक वस्तुएँ
(iii) पौधों के रेशे	वस्त्रों का धागा
(iv) पौधों के दृढ़फल	भोजन व तेल
(v) पौधों का तना	रबड़, बलाटा, गोंद व राल।

भोजन संग्रह व आखेट व्यवसाय की प्रमुख विशेषताएँ—(i) भोजन संग्रह व आखेट नामक आर्थिक क्रियाकलापों को आदिमकालीन मानव द्वारा कठोर जलवायु दशाएँ रखने वाले क्षेत्रों में किया जाता है।

(ii) यह कार्य विश्व के विभिन्न भागों में विभिन्न स्तरों व विभिन्न रूपों में किया जाता है।

(iii) यह व्यवसाय भोजन, वस्त्र, शरण जैसी अत्यन्त महत्वपूर्ण प्राथमिक आवश्यकताओं की आपूर्ति के उद्देश्य से किया जाता है।

(iv) इस व्यवसाय में बहुत कम पूँजी, निम्नस्तरीय तकनीक तथा अधिक मानवीय श्रम की आवश्यकता होती है।

(v) प्रति व्यक्ति उत्पादकता कम होती है।

पशुचारण (Pastoralism)

शिकार पर निर्भर मानवीय समूहों ने जनसंख्या के बढ़ने पर यह अनुभव किया, कि उनका भरण-पोषण केवल शिकार से प्राप्त भोजन सामग्री से नहीं हो सकता। तब मानव द्वारा पशुपालन व्यवसाय अपनाने के बारे में सोचा जाने लगा तथा अपने-अपने भौगोलिक परिवेश में उपलब्ध कुछ उपयोगी पशुओं का चुनाव कर उन्हें पालतू बनाया गया।

भौगोलिक कारकों तथा तकनीकी विकास के आधार पर वर्तमान समय में पशुचारण व्यवसाय के निम्नलिखित दो वर्ग मिलते हैं—

A. चलवासी पशुचारण, B. वाणिज्य पशुधन पालन।

(A) चलवासी पशुचारण (Nomadic Herding)

चलवासी पशुचारण मानव का प्राचीन जीवन-निर्वाहक व्यवसाय है जिसमें पशुचारक अपने भोजन, वस्त्र, शरण, औजारों एवं परिवहन के लिए पशुओं पर आश्रित रहता है। (Nomadic herding is a primitive subsistence activity, in which the herders rely on animals for food, clothing, shelter, tools and transport.) पशुचारक अपने पालतू पशुओं के साथ पानी व उपयुक्त चरागाहों की तलाश में एक स्थान से दूसरे स्थान को स्थानान्तरित होते रहते हैं। प्रायः प्रत्येक पशुचारक वर्ग के अपने-अपने निश्चित चरागाह क्षेत्र होते हैं। भिन्न-भिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में अलग-अलग प्रकार के पशु पाले जाते हैं। उदाहरण के लिए, घुमक्कडी पशुचारकों द्वारा उष्णकटिबन्धीय अफ्रीका में गाय-बैल तथा सहारा व एशिया के मरुस्थलीय भागों में भेड़, बकरी तथा ऊँट प्रमुख पालित पशु हैं। एण्डीज के पर्वतीय भागों तथा तिब्बत के पठारी भाग पर याक व लामा तथा आर्कटिक व उप ध्रुवीय क्षेत्रों में रेन्डियर नामक पशु को प्रमुख रूप से पाला जाता है।

इन पालित पशुओं को एक ही स्थान पर चारा नहीं मिल पाता। अतः पशुचारक घास व चारे की तलाश में उक्त पशुओं के साथ एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते हैं।

विश्व में चलवासी पशुचारण के प्रमुख क्षेत्र—विश्व में चलवासी पशुचारण के अग्रलिखित 3 क्षेत्र हैं (चित्र 2.2) :

भोजन संग्रह व्यवसाय का व्यापारीकरण—उच्च अक्षांशीय तथा निम्न अक्षांशीय क्षेत्रों के कुछ भागों में अधिक पूँजी तथा उच्च तकनीक के माध्यम से भोजन संग्रह व्यवसाय का व्यापारीकरण कर दिया गया है। इसके अन्तर्गत स्थानीय लोगों की सहायता से कीमती वृक्षों की पत्तियाँ, छाल एवं औषधीय पौधों का संग्रह कराया जाता है तथा इन्हें संशोधित कर अन्तर्राष्ट्रीय बाजारों में विक्रय कर दिया जाता है। उदाहरण के लिए, निम्नलिखित संगृहीत वनोत्पादों का आधुनिक मशीनों की सहायता से शोधन कर विभिन्न उपयोगी उत्पादन प्राप्त किए जाते हैं।

संगृहीत वस्तुएँ	शोधित उत्पाद
(i) पौधों की छाल	कुनैन तथा कार्क
(ii) पौधों की पत्तियाँ	पेय पदार्थ, दवाइयाँ तथा कान्तिवर्द्धक वस्तुएँ
(iii) पौधों के रेशे	वस्त्रों का धागा
(iv) पौधों के दृढ़फल	भोजन व तेल
(v) पौधों का तना	रबड़, बलाटा, गोंद व राल।

भोजन संग्रह व आखेट व्यवसाय की प्रमुख विशेषताएँ—(i) भोजन संग्रह व आखेट नामक आर्थिक क्रियाकलापों को आदिमकालीन मानव द्वारा कठोर जलवायु दशाएँ रखने वाले क्षेत्रों में किया जाता है।

(ii) यह कार्य विश्व के विभिन्न भागों में विभिन्न स्तरों व विभिन्न रूपों में किया जाता है।

(iii) यह व्यवसाय भोजन, वस्त्र, शरण जैसी अत्यन्त महत्वपूर्ण प्राथमिक आवश्यकताओं की आपूर्ति के उद्देश्य से किया जाता है।

(iv) इस व्यवसाय में बहुत कम पूँजी, निम्नस्तरीय तकनीक तथा अधिक मानवीय श्रम की आवश्यकता होती है।

(v) प्रति व्यक्ति उत्पादकता कम होती है।

पशुचारण (Pastoralism)

शिकार पर निर्भर मानवीय समूहों ने जनसंख्या के बढ़ने पर यह अनुभव किया, कि उनका भरण-पोषण केवल शिकार से प्राप्त भोजन सामग्री से नहीं हो सकता। तब मानव द्वारा पशुपालन व्यवसाय अपनाने के बारे में सोचा जाने लगा तथा अपने-अपने भौगोलिक परिवेश में उपलब्ध कुछ उपयोगी पशुओं का चुनाव कर उन्हें पालतू बनाया गया।

भौगोलिक कारकों तथा तकनीकी विकास के आधार पर वर्तमान समय में पशुचारण व्यवसाय के निम्नलिखित दो वर्ग मिलते हैं—

A. चलवासी पशुचारण, B. वाणिज्य पशुधन पालन।

(A) **चलवासी पशुचारण** (Nomadic Herding)

चलवासी पशुचारण मानव का प्राचीन जीवन-निर्वाहक व्यवसाय है जिसमें पशुचारक अपने भोजन, वस्त्र, शरण, औजारों एवं परिवहन के लिए पशुओं पर आश्रित रहता है। (Nomadic herding is a primitive subsistence activity, in which the herders rely on animals for food, clothing, shelter, tools and transport.) पशुचारक अपने पालतू पशुओं के साथ पानी व उपयुक्त चरागाहों की तलाश में एक स्थान से दूसरे स्थान को स्थानान्तरित होते रहते हैं। प्रायः प्रत्येक पशुचारक वर्ग के अपने-अपने निश्चित चरागाह क्षेत्र होते हैं। भिन्न-भिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में अलग-अलग प्रकार के पशु पाले जाते हैं। उदाहरण के लिए, घुमक्कडी पशुचारकों द्वारा उष्णकटिबन्धीय अफ्रीका में गाय-बैल तथा सहारा व एशिया के मरुस्थलीय भागों में भेड़, बकरी तथा ऊँट प्रमुख पालित पशु हैं। एण्डीज के पर्वतीय भागों तथा तिब्बत के पठारी भाग पर याक व लामा तथा आर्कटिक व उप ध्रुवीय क्षेत्रों में रेन्डियर नामक पशु को प्रमुख रूप से पाला जाता है।

इन पालित पशुओं को एक ही स्थान पर चारा नहीं मिल पाता। अतः पशुचारक घास व चारे की तलाश में उक्त पशुओं के साथ एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते हैं।

विश्व में चलवासी पशुचारण के प्रमुख क्षेत्र—विश्व में चलवासी पशुचारण के अग्रलिखित 3 क्षेत्र हैं (चित्र 2.2) :

(i) उत्तरी अफ्रीका के अटलांटिक तट से अरब प्रायद्वीप से होता हुआ मंगोलिया व मध्य चीन तक—विश्व में चलवासी पशुचारण का सर्वप्रपुख क्षेत्र है।

(ii) यूरोप व एशिया महाद्वीप के उत्तरीभागों में विस्तृत टुण्ड्रा प्रदेश।

(iii) दक्षिणी गोलार्द्ध में दक्षिणी-पश्चिमी अफ्रीका एवं मेडागास्कर द्वीप।

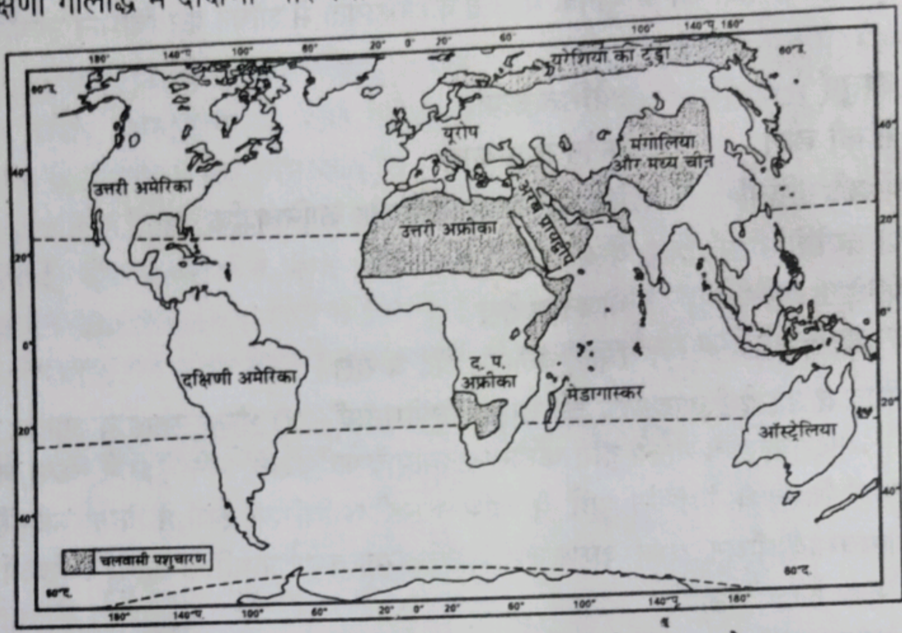

चित्र 2.2 : विश्व में चलवासी पशुचारण के प्रमुख क्षेत्र

पशुचारण प्रक्रिया तथा ऋतुप्रवास (Pastoralism and Transhumance)—सभी चलवासी पशुचारक नवीन चरागाहों की खोज में समतल भूभागों तथा पर्वतीय भागों में लम्बी दूरियों तक भ्रमण करते हैं।

मध्य एशिया के खिरगीज मौसमी पशुचारण करते हैं। जब ग्रीष्म ऋतु में अधिक गर्मी के कारण शुष्क मैदानी भागों में पानी के साधनों का अभाव हो जाता है व घास सूख जाती है तो वे अपने पशुओं के साथ उत्तम चरागाहों की खोज में पर्वतपदीय एवं पर्वतीय ढालों की नदी घाटियों, वादियों और झरनों के निकट चल देते हैं। यहाँ खिरगीज अपने पशुओं को चराने के लिए ले जाते हैं और शीत ऋतु के आने पर पूर्व निश्चित स्थानों पर लौट आते हैं। इस प्रकार खिरगीज सदैव शीत एवं ग्रीष्म ऋतु में अपने स्थान बदल लिया करते हैं। इस प्रकार के स्थानान्तरण को ही **ऋतु प्रवास** (Transhumance) कहा जाता है। इसी प्रकार टुण्ड्रा प्रदेश के लैप्स, सेमोयड्स तथा एस्किमो ग्रीष्म ऋतु में उत्तर की ओर तथा शीत ऋतु में दक्षिण की ओर प्रवास करते हैं। इनका पालतू पशु रेण्डियर है। कुत्तों तथा रेण्डियरों का उपयोग बोझा ढोने वाले पशुओं के रूप में उत्तरी उप ध्रुवीय क्षेत्रों में किया जाता है।

पर्वतीय प्रदेश में चरवाहे ग्रीष्म ऋतु में अधिक उच्च स्थानों पर पशु लेकर चले जाते हैं और शीत ऋतु में घाटियों में उतर आते हैं। हिमालय के पर्वतीय प्रदेश के गुर्जर, गद्दी, बकरवाल तथा भूटिया जनजाति के पशुचारक ऋतु प्रवास करते हैं।

कई देशों द्वारा राजनीतिक सीमाओं का अधिरोपण करने तथा घुमक्कड़ी पशुपालकों के लिए नवीन बस्ती योजना कार्यान्वित करने के कारण इन घुमक्कड़ी पशुपालकों की संख्या एवं इनके द्वारा प्रयुक्त किए जाने वाले क्षेत्रों में कमी आती जा रही है।

(B) वाणिज्य पशुधन पालन (Commercial Livestock Rearing)

वाणिज्य पशुधन-पालन विस्तृत घास भूमि पर आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति द्वारा किया जाने वाला व्यवस्थित एवं पूँजी प्रधान व्यवसाय है। इस व्यवसाय में विस्तृत घास भूमि क्षेत्रों में पशुओं को नियन्त्रित चराने के लिए छोटे-छोटे फार्मों में विभक्त कर दिया जाता है तथा दो फार्मों को अलग करने के उद्देश्य से बीच में बाढ़ लगा दी जाती है। इन छोटे-छोटे फार्मों में, माँस, ऊन तथा खालों को व्यापारिक स्तर पर प्राप्त करने के लिए उत्तम नस्ल के पशुओं को पाला जाता है। एक घास फार्म में घास समाप्त हो जाने पर पालित पशुओं को दूसरे घास फार्म में ले जाया जाता है। एक घास फार्म में प्रमुख रूप से एक ही प्रकार के पशु पाले जाते हैं। यहाँ पालित पशुओं में भेड़, बकरी, गाय-बैल तथा घोड़े प्रमुख हैं। इन पशुओं से प्राप्त माँस, खालों तथा ऊन को आधुनिक तकनीक